# मूंगफली

| ए.ई.एस–I | ए.ई.एस–II | ए.ई.एस–III | ए.ई.एस–IV |
|---|---|---|---|
| – | – | – | विस्तारी किस्में – एम–13<br>अर्द्ध विस्तारी किस्में–<br>एच एन जी 10, जी जी 20<br>गुच्छेवाली किस्में<br>टी जी – 39, टी जी –37 ए, गिरनार–2, आर.जी.–425, एच.एन.जी.–123 |

**उन्नत किस्में** :– मूंगफली की तीन अलग–अलग प्रजातियां होती हैं। हल्की मिट्टी के लिये फैलने वाली और भारी मिट्टी के लिये झुमका किस्म के पौधों वाली जातियां है, जो भूमि के अनुसार बोने के काम में ली जाती है। कम फैलने वाली या फैलने वाली प्रजाति के पौधों की शाखायें फैल जाती हैं तथा मूंगफली दूर–दूर लगती है। जबकि झुमका प्रजाति की फलियां मुख्य जड़ के पास लगती है और इनका दाना गुलाबी या लाल रंग का होता है। इसकी पैदावार फैलने वाली प्रजाति से कम आती है, परन्तु ये जल्दी पकती है। उपयुक्त किस्मों की विशेषताओं का विवरण निम्न प्रकार है।

**एच एन जी 10 (1999)** :– यह अर्द्ध विस्तारी किस्म, अच्छी वर्षा या जहां जीवन रक्षक सिंचाई जल उपलब्धता वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। इसकी पत्तियां गहरी हरी तथा पौधे मध्यम फैलाव वाले होते हैं। यह किस्म 125–130 दिन में पक कर लगभग 20 क्विण्टल प्रति हैक्टर उपज देती है। इसकी फली में औसतन दो दाने होते हैं। 100 दानों का वजन 45 ग्राम के लगभग होता है तथा इनमें तेल की मात्रा 50–51 प्रतिशत होती है।

**टी जी 37 ए (2004)** :– यह एक गुच्छेदार, मध्यम ऊँचाई तथा सीधी बढ़ने वाली किस्म है जो 120–125 दिन में पक कर लगभग 20 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर उपज देती है। इसके दाने गुलाबी रंग के होते हैं तथा 100 दानों का वजन 48 ग्राम होता है। इनमें 48 प्रतिशत तेल तथा 23 प्रतिशत प्रोटीन की मात्रा होती है।

**जी जी 20** :– यह एक अर्द्ध विस्तारी किस्म है जो 115 से 120 दिन में पक जाती है इसकी फली में समान्यतया 2 से 3 दाने होते हैं। 100 दानों का वजन 42 ग्राम के लगभग तथा दानों में 48 प्रतिशत तेल होता है। इसकी औसतन उपज 25 से 30 क्विण्टल होती है।

**टी जी 39 (2008)** :– इस गुच्छे वाली किस्म को भाभा अणु अनुसंधान केन्द्र, मुंबई तथा राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर ने संयुक्त रूप से विकसित किया। इसके दाने बड़े होते हैं तथा यह किस्म लगभग 115–120 दिन में पक जाती है। इसमें तना गलन तथा पिलिया रोग भी कम होते है। इसकी औसत उपज 25–30 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर होती है।

**गिरनार–2 (2008)** :– मूंगफली अनुसंधान निदेशालय जूनागढ़ (गुजरात) द्वारा विकसित यह किस्म मुख्यतः खरीफ मौसम के लिये उपयुक्त है। इस किस्म के दाने बड़े आकार के तथा सौ दानों का भार लगभग 62 ग्राम होता है। इसकी औसत उपज 29 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक होती है। इसके दानों में तेल की मात्रा 51 प्रतिशत बतायी गई है। यह किस्म रतुआ रोग के प्रति सहिष्णु बतायी गई है।

**एच.एन.जी. 123 (2011)** :– कृषि अनुसंधान उप केन्द्र हनुमानगढ़ द्वारा विकसित यह किस्म गुच्छानुमा प्रकार की है। इस किस्म की औसत उपज 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तथा दानों में तेल की मात्रा 49 प्रतिशत तक बतायी गई है।

**आर.जी. 425 (2011)** :– राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान दुर्गापुरा द्वारा विकसित यह किस्म विशेषतः राजस्थान राज्य के लिये खरीफ के मौसम के लिये निस्तारित की गई है। इस किस्म की औसत उपज 18–36 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तथा दानों में तेल की मात्रा 48 प्रतिशत पायी जाती है। यह किस्म सूखे के प्रति व कॉलर गलन रोग के प्रति प्रतिरोधी बतायी गई है।

**आर जी 510**– वर्जिनियां एक प्रकार की यह किस्म विस्तारी वर्ग की है। इसके दाने मोटे व 100 दानो का वजन लगभग 65–68 ग्राम होता है इसकी औसत 28 से 30 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। यह किस्म कोलररोट स्टेमरोट लीफ स्पॉट आदि रोगों के प्रति प्रतिरोधी है। तथा थ्रिप्स, जैसिड व ग्रासहॉपर जैसे कीड़ों के प्रति सहिष्णु भी है।

**खेत की तैयारी** :– मूंगफली विभिन्न प्रकार के मिट्टियों में उपजाई जा सकती है। रेतीली दोमट एवं भारी मटियार दोमट भूमि में अलग–अलग जाति की मूंगफली बोई जाती है। एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से तथा बाद में देशी हल से या हैरा से 2–3 बार खेत की जुताई करें, ताकि भूमि भुरभुरी हो जाये इसके बाद पाटा चला कर बुवाई के लिये खेत तैयार करें।

**भूमि उपचार** :– अन्तिम पृष्ठों में भूमि उपचार शीर्षक में दिये गये विवरण के अनुसार उपाय अपनायें।

**सफेद लट नियंत्रण** :– पुस्तक के अन्त में दिये गये विवरण के अनुसार उपाय अपनायें।

**मित्र फफूंद द्वारा दीमक नियंत्रण** – 10 किलो मित्र फंफूद *बावेरिया बेसियाना* या *मेटारिजियम एनिसोपली* पाउडर को प्रति हैक्टेयर की दर से 125 किलो गोबर की खाद में कल्चर करके बुवाई पूर्व खेत में डालें।

**उर्वरक** – मूंगफली में प्रति हैक्टेयर 60 किलो फास्फोरस और 15 किलो नत्रजन बुवाई के पहले ऊर कर देवें। सिंचित क्षेत्रों में अन्तिम जुताई से पूर्व भूमि में प्रति हैक्टेयर 250 किलो जिप्सम मिलावें फास्फोरस तत्व की पूर्ति सिंगल सुपर फास्फेट द्वारा किया जाना उचित रहता है। मूंगफली की बड़े दानों वाली किस्मों सें अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिये नत्रजन 20 कि.ग्रा. एवं फास्फोरस 75 कि.ग्रा./हैक्टेयर के साथ 7.5 टन गोबर की देशी खाद देवें।

## बीज उपचार

**फफूंदनाशी से उपचार** :– बुवाई से पहलें प्रति किलो बीज में 3 ग्राम थाईरम या 2 ग्राम मैन्कोजेब या कार्बेण्डाजिम या कार्बोक्सिन 37.5 प्रतिशत + टीएम टीडी 37.5 प्रतिशत ( 3 ग्राम प्रतिकिलो बीज ) दवा मिलाकर उपचारित करें।

**कीटनाशी से उपचार** :– सफेद लट की रोकथाम के लिये प्रति 40 किलो बीज को एक लीटर क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. या क्यूनॉलफॉस 25 ई.सी. की दर से उपचारित करें। दीमक के लिये बीज को 4–5 मिलीलीटर क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. या इमिडाक्लोप्रिड 70 डब्ल्य.एस.

5.0 ग्राम प्रतिकिलो बीज की दर से उपचारित करके बोयें या मित्र फफूँद *बावेरिया बासियाना* या *मेटारिजियम एनिसोपली* (कोई एक) से 10 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित करें।

**राईजोबिया शाकाणु संवर्ध (कल्चर) से उपचार** :– कल्चर से बीजोपचार पुस्तक के अन्त में दिये विवरणानुसार करें।

**फंफूदनाशी, कीटनाशी और राईजोबियम कल्चर से बीजोपचार उपर्युक्त क्रम में ही करें।**

## बीज दर एवं बुवाई

- झुमका (गुच्छेदार) किस्म का 100 किलो बीज (गुली) प्रति हैक्टेयर बोयें। झुमका किस्मों में कतार से कतार की दूरी 30 सेन्टीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 10–15 सेन्टीमीटर रखें।
- मूंगफली की झुमका किस्मों ( टी जी 39, टी जी 37 ए) की बुवाई का उचित समय मध्य जून है।
- फैलने वाली (अर्द्ध विस्तारी एवं विस्तारी) किस्म का 60–80 किलो बीज प्रति हैक्टेयर बोयें। फैलने वाली किस्मों में कतार से कतार की दूरी 40–45 सेन्टीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 10–15 सेन्टीमीटर रखें।
- मूंगफली की फैलने वाली किस्मों की बुवाई का सही समय जून के प्रथम से दूसरे सप्ताह तक है।

## सिंचाई एवं निराई गुड़ाई

- सूखा पड़ने पर आवश्यकतानुसार 1–2 सिंचाई खासतौर पर फूल आने और दाना बनते समय अवश्य करें। एक ही सिंचाई के लिये पानी उपलब्ध हो तो इस सिंचाई को 55–75 दिन की अवधि में देवें।
- खेत में खरपतवार निकालते रहें। 30 दिन की फसल होने पर

निराई गुड़ाई पूरी कर लेवें। बुवाई के एक माह बाद झुमका किस्म के पौधों की जड़ों पर मिट्टी चढ़ायें। जमीन में सुइयां बनना शुरू होने के बाद गुड़ाई बिल्कुल न करें।

- मूंगफली की फसल में रासायनिक तरीके से खरपतवार नियन्त्रण हेतु 1.0 किलोग्राम पेंडीमिथालिन प्रति हैक्टेयर को 600 लीटर पानी में घोलकर कट नोजल द्वारा मूंगफली उगने से पहले ( बुवाई के दूसरे–तीसरे दिन) छिड़काव करें तथा उसके बाद 20 दिन की फसल अवस्था पर एक हल्की निराई–गुड़ाई भी करें।

**कातरा** :– रोकथाम के लिये पुस्तक के अन्त में पृथक से दिये गये विवरण के अनुसार उपाय करें।

**दीमक** :– खड़ी फसल में दीमक का प्रकोप दिखाई देने पर 4 लीटर क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. प्रति हैक्टेयर सिंचाई के पानी के साथ दीजिये।

**मोयला** :–

मैलाथियॉन 50 ई. सी. सवा लीटर या मिथाईल डिमेटॉन 25 ई.सी. एक लीटर दवा का पानी में घोल बनाकर प्रयोग करें।

**मकड़ी** :– मकड़ी का प्रकोप कही दिखाई देने पर गंधक चूर्ण 16–20 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकें।

**जड़ गलन एवं कॉलर रोट** :– इन रोगों के नियन्त्रण हेतु मित्र फफूद ट्राईकोडर्मा विरिडी 10 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से बीजोपचार व जरूरत आधारित 250 किलोग्राम जिप्सम + 20 किलोग्राम जिंक सल्फेट + 20 किलोग्राम फैरस सल्फेट + 30 किलोग्राम पोटाश + 2.5 किलोग्राम ट्राईकोडर्मा विरिडी प्रति हेक्टेयर के हिसाब से उपयोग करें। कृपया, नोट करें कि इन पोषकों की दी गई मात्रा का प्रयोग नियमित न करें बल्कि मृदा जांच उपरांत ही आवश्यकतानुसार करें।

ट्राईकोडर्मा विरिडी 2.5 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर (100 कि.ग्रा. गोबर की खाद में मिलाकर) बुवाई पूर्व भूमि में देवें। खड़ी फसल में रोगों के लक्षण दिखाई देते ही कार्बेण्डाजिम दवा (0.1 प्रतिशत) का छिड़काव करें तथा आवश्यकता होने पर 15 दिन बाद छिड़काव दोहराये।

**टिक्का रोग** :– टिक्का रोग फसल उगने के 40 दिन बाद दिखाई देता है। इस रोग से पत्तियों पर मटियाले रंग के गहरे भूरे धब्बे पड़ जाते हैं। रोकथाम हेतु रोग दिखाई देते ही कार्बेण्डाजिम आधा ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का अथवा एक से डेढ़ किलो मैन्कोजेब का प्रति हैक्टेयर छिड़काव करें। इसके बाद 10–15 दिन के अन्तर पर ऐसे दो छिड़काव और आवश्यकतानुसार करें। मूंगफली में टिक्का व अल्टरनेरिया रोग की रोकथाम हेतु पाइरोक्लोट्रोबिन + इपॉक्सीकॉनाजोल का 1.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना प्रभावी पाया गया है।

**पीलिया रोग** :– जिन खेतों में मूंगफली में पीलिया रोग लगता है वहां तीन साल में एक बार बुवाई से पूर्व 250 किलो जिप्सम या भूमि परीक्षण/सर्वे रिर्पोट के आधार पर हरा कसीस प्रति हैक्टेयर डालें। इसके अभाव में गन्धक के तेजाब के 0.1 प्रतिशत घोल का फसल में फूल आने से पहले एक बार तथा पूरे फूल आ जाने के बाद दूसरी बार छिड़काव करके भी पीलिये का नियंत्रण किया जा सकता है। पीलिया की रोकथाम के लिये बुवाई के 40–55 दिन पर फैरस सल्फेट (हरा कसीस) का 0.5 प्रतिशत का छिड़काव करें। इस घोल में चिपकना पदार्थ जैसे साबुन आदि अवश्य मिलावें।

**खुदाई** :– मूंगफली पकने का समय अक्टूबर अन्त से नवम्बर मध्य तक है। फसल पकते समय भी हरी रहती है अतः खोद कर देख लेवें कि फलियां पक गयी हैं या नहीं। अगर 80 प्रतिशत फलियां पक गई हो और पत्तियां पीली पड़ जाये तो खुदाई कर लेवें। खेत में सिंचाई करके अथवा बत्तर आने पर पौधे को उखाड़ लीजिये। इन पौधों को ढेर के रुप में 7–10 दिन तक धूप में सुखाये और उसके बाद मूंगफली को तोड़कर अलग निकाल लें।

**भण्डारण** :– मूंगफली को अच्छी तरह सुखाकर ही भण्डारण करें। मूंगफली के दानों में नमी की मात्रा 8 से 10 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिये अन्यथा बीज पर एस्परजिलस नामक फफूंद लगने से एक विषैला पदार्थ (एफ्लाटोक्सिन) जमा होना शुरू हो जाता है। इससे ग्रस्त बीजों को खाना घातक सिद्ध होता है। ■